thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक : 48
सृष्टि संवत् 1960853115
8 मार्च 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 48, 5/8 मार्च 2015 तदनुसार 24 फाल्गुन सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

6 मार्च को बलिदान दिवस पर विशेष-

अमर शहीद-पंडित लेखराम जी

-ले० श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

धर्म के लिए बलिदान जाति के लिए वे काम करते हैं, जो किसी भवन के निर्माण में सीमेंट का काम करते हैं। गीता में श्रीकृष्ण जी महाराज ने भी कहा है- **स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः** अर्थात् अपने धर्म के लिए मर मिटना भी कल्याणकारी होता है, दूसरों का धर्म भय देने वाला होता है। गीता की इन्हीं पक्तियों का अनुसरण करने वाले हमारे नायक धर्मवीर पं. लेखराम जी आर्य मुसाफिर थे। पं. लेखराम जी आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के पक्के अनुयायी थे। अपने धर्म के प्रति उनके अन्दर अपार निष्ठा थी।

पं. लेखराम जी का जन्म जेहलम जिले के एक ग्राम सैदपुर में हुआ था। बाल्याकाल में पं. लेखराम का अध्ययन फारसी एवं उर्दू के माध्यम से हुआ। सामान्य शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात वे सत्रह वर्ष की आयु में पुलिस में भर्ती हो गए। इस विभाग में उन्नति करते-करते वे सार्जेंट के पद तक पहुंच गए। पुलिस की सेवा करते-करते पं. लेखराम जी को आर्य समाज का प्रकाश मिला। इससे वे इतने प्रभावित हुए कि सरकारी सेवा को लात मार कर आर्य समाज के प्रचारक बन गए। उर्दू और फारसी का ज्ञान तो था ही परन्तु इन्होंने हिन्दी और संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अभ्यास शुरू कर दिया। तत्पश्चात वैदिक ग्रन्थों के गम्भीर स्वाध्याय ने आपकी योग्यता को चार चांद लगाए। पं. लेखराम ने कुरानशरीफ का अध्ययन तो तन्मयता से किया था किन्तु बाईबल तथा अन्य मतावलम्बी सिद्धान्त ग्रन्थों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया। उस अध्ययन के निष्कर्ष को जन साधारण तक पहुंचाने के लिए उसे लेखबद्ध किया और उन सब लेखों और पुस्तकों का संग्रह करके पुस्तकाकार में छपवा कर उस पुस्तक का नाम कुलियात आर्य मुसाफिर रखा जो उस अमर शहीद की योग्यता तथा अनुभव का प्रतीक है।

अमर शहीद पं. लेखराम जी एक अत्यन्त प्रतिभाशाली वक्ता एवं अन्वेषक थे। प्रत्येक घटना तथा घटना की गहराई तक पहुंचना उनका एक विशेष गुण था। इस अन्वेषण के कार्य के लिए उन्हें विभिन्न स्थानों पर अनेकों बार आना जाना पड़ा। प्रचार तथा शास्त्रार्थ के उद्देश्य से वे निरन्तर अपने बलिदान तक इधर-उधर भ्रमण करते रहे। इसी कारण पं. लेखराम जी का नाम आर्य पथिक अथवा आर्य मुसाफिर पड़ गया। इस्लाम से सम्बन्धित सब सम्प्रदायों से इनके शास्त्रार्थ हुआ करते थे किन्तु मिर्जाई मतावलम्बियों से इनकी अनेक टक्करें होती रहीं। मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी विशेष रूप से इनसे चिढ़ते थे क्योंकि पं. लेखराम ने अहमदिया सम्प्रदाय और उसके स्वयंभू पैगम्बर को अपनी आलोचना का लक्ष्य बनाया था। इस सम्प्रदाय की मान्यताओं के खण्डन में उन्होंने अनेक ग्रन्थ निकाले। मिर्जा साहिब ने इस अमर शहीद को आतंकित करने के लिए कई अवैध और घृणित साधनों को अपनाया किन्तु यह साहसी वीर एक बार लगभग एक मास तक मिर्जा साहिब के गढ़ कादियां में दहाड़ता रहा। मिर्जा साहिब के सारे इलहाम और भविष्यवाणियों की पोलें खुली तो वे ऐसे दयानन्द भक्त, धर्मप्रेमी को सहन न कर सके। एक कायर और कृतघ्न व्यक्ति जो शुद्ध होने के बहाने से उनके पास लाहौर भेज दिया, जिसने अवसर मिलते ही इस अमर शहीद का अंगड़ाई लेते समय उनकी छाती में छुरा घोंप दिया। महर्षि दयानन्द के पश्चात यह आर्य समाज का दूसरा बलिदान था।

पण्डित लेखराम जी ने मरते समय आर्य समाज के नाम एक सन्देश दिया कि- आर्य समाज से तहरीर और तकरीर का काम बन्द नहीं होना चाहिए। इस प्रकार अमर शहीद के गुणों का कहां तक वर्णन करें। प्रचार के कार्य के लिए चलती हुई गाड़ी से अपने जीवन की ममता को छोड़ कर छलांग लगाना, अपनी पति परायण पत्नी और स्नेहशील माता से निस्पृह होकर प्रचार कार्य में जुटे रहना, अपने एकाकी मरणासन्न पुत्र को रूग्णावस्था में छोड़ कर अपनी जाति के सैंकडों लोगों को बचाने के लिए चले जाना, यह घटनाएं तो उनके धर्म धुनी जीवन की साधारण घटनाएं बन गई थी। जब एकाकी पुत्र के परलोक गमन का तार उन्हें मिला तो यह कहना कि बच्चे की चिन्ता से मुझे मुक्त करने और जाति की सेवा में अधिक तत्परता से सन्नद्ध होने के लिए मेरे प्रभु ने स्वयं दायित्व सम्भाल लिया।

6 मार्च को ऐसे धर्मप्रेमी, धर्मवीर, आर्य समाज के दीवाने आर्य मुसाफिर पं. लेखराम जी को श्रद्धाजंलि देते हुए हम सभी उस आर्य पथिक के मार्ग का अनुसरण करें। उनके बलिदान से शिक्षा लेकर अपने धर्म के लिए आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य करें। यही हमारी उस धर्मवीर को सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

thearyasamaj.org

वेदों के रचयिता ऋषि नहीं थे

-ले० श्री वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E, कैलाश नगर, फजिल्का, पंजाब

'हिन्दू सभा वार्ता' 19 नवम्बर से 24 नवम्बर, 2014 के अंक में ''सप्त ऋषि'' मुख्य शीर्षक के अन्तर्गत बॉक्स में ''वेदों के रचयिता ऋषि'' में लिखा है—

''ऋग्वेद में लगभग एक हजार सूक्त हैं, लगभग दस हजार मन्त्र हैं। चारों वेदों में करीब बीस हजार है और इन मन्त्रों के रचयिता कवियों को हम ऋषि कहते है। बाकी तीन वेदों के मन्त्रों की तरह ऋग्वेद के मन्त्रों की रचना में भी अनेकानेक ऋषियों का योगदान रहा है।''

इस लेख के लेखक का नाम यहां प्रकाशित नहीं किया गया है। क्या ही अच्छा हो कि लेख के साथ ही लेखक का नाम भी दिया जाये। यदि लेख कहीं से उद्धृत किया गया है तो साभार लिख कर पुस्तक/पत्रिका का नाम-पृष्ठादि दिया जाये जिससे उसके बारे में ज्ञात हो सके।

लेख से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि लेखक पाश्चात्य विद्वानों से प्रभावित है अथवा उस भारतीय लेखक से, जिसने भारतीय संस्कृति, वैदिक मान्यताओं को कुत्सित करने का प्रयास किया है।

वस्तुत: वैदिक परम्परा के अनुसार ऋषि वेदमन्त्रों के रचयिता नहीं हैं अपितु अर्थों के साक्षात्कर्ता हैं। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, जिसे परमात्मा ने सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा ऋषियों को क्रमश: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। उन चारों ऋषियों ने 'ब्रह्मा' को वेदज्ञान दिया। तत्पश्चात् ब्रह्मा ने आगे उपदेश दिया। यथा—

यस्माद् ऋचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्। सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भं ब्रूहि कतम: स्विदेव स:॥

अथर्व, 10/7/20

जिस परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद प्रकाशित हुए हैं, वह कौन सा देव है? जो सबको उत्पन्न करके धारण कर रहा है, वह परमात्मा है।

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋच: सामानि जज्ञिरे।

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥ यजु. 31/7

उस सच्चिदानन्द, सर्वव्यापक, उपासनीय, सर्वसामर्थ्ययुक्त परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद उत्पन्न हुए हैं।

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य नि:श्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेद: सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस:॥

शत. कां. 14 अ. 4 कं. 10

महाविद्वान् महर्षि याज्ञवल्क्य मैत्रेयी से कहते हैं—

हे मैत्रेयी! जो आकाशादि से बड़ा सर्वव्यापक परमेश्वर है, उससे ही ऋग्, यजु, साम और अथर्व - ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। जैसे मनुष्य के शरीर से श्वास बाहर आ के फिर भीतर को जाता है, इसी प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संचार में प्रकाश करता है।

ऋग्वेदादि भा.भू., वेदोत्पत्ति-विषय

मनु महाराज ने भी इसी मान्यता को स्वीकार किया है-

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्।

दुदोह यज्ञ सिद्ध्यर्थं ऋग्यजु: सामलक्षणम्॥ मनु. 1/23

विश्वयज्ञ के संचालन के लिए सनातन ऋग्, यजु, साम और अथर्व को अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा देवर्षियों द्वारा प्रकाशित किया और उन देवर्षियों ने ब्रह्मा को प्राप्त कराए।

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।

वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥ मनु. 1/21

उस परमात्मा ने वेद शब्द से पूर्व सृष्टि के समान सबके अलग-अलग नाम और काम निश्चित किए तथा पृथक् पृथक् संस्था (विभाग) बनाए।

उल्लिखित प्रमाणों से पूर्णत: स्पष्ट है कि जिन ऋषियों का लेखक ने वेदमन्त्रों के रचयिता के रूप में वर्णन किया है, वे उत्तरवर्ती हैं। वेद उनसे पूर्व विद्यमान थे। अत: वे रचयिता के रूप में नहीं हो सकते।

वस्तुत: वेद मनुष्यकृत नहीं हैं, अपितु ईश्वरीय ज्ञान हैं। ऋषियों ने वेदमन्त्रों का साक्षात्कार किया था, अर्थज्ञान में विशेषज्ञता प्राप्त की थी। इसीलिए उनका उल्लेख उस सूक्त के आदि में किया गया है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं—

ऋषयो मन्त्रदृष्टय: मन्त्रान् सम्प्रादु:॥ निरुक्त

''जिस-जिस मन्त्रार्थ का दर्शन जिस-जिस ऋषि को हुआ और प्रथम ही, जिसके पहले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था, किया और दूसरों को पढ़ाया भी, इस लिए उस-उस मन्त्र के साथ ऋषि का नाम स्मरणार्थ लिखा लिखाया आता है। जो कोई ऋषियों को मन्त्रकर्ता बतलावे, उसको मिथ्यावादी समझो। वे तो मन्त्रों के अर्थ प्रकाशक हैं।''

-सत्यार्थ प्रकाश समु. 7

वेद में लौकिक इतिहास नहीं है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द कहते हैं—

प्रश्न- जैसे ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी, गार्गी, जनक आदि के इतिहास लिखे हैं, वैसे ही ''त्र्यायुषं जमदग्ने:.....॥'' यजु. 3/62 इत्यादि वेदों में पाये जाते हैं।

उत्तर- ऐसा भ्रम मत करो। क्योंकि जमदग्नि और कश्यप ये नाम यहां देहधारी मनुष्यों के नहीं हैं। इसका प्रमाण शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि- 'चक्षु का नाम जमदग्नि और प्राण का नाम कश्यप है।'

चक्षुर्वै जमदग्निर्ऋषि:॥ शतपथ 8/1/2/3

ऋग्वेदादि भा.भू., वेद संज्ञाविचार

अत: विभिन्न ऋषियों के नामों को देखकर लेखक ने वेदों में इतिहास की जो कल्पना की है, वह कपोलकल्पित ही है, यथार्थ नहीं। क्योंकि इतिहास तो बाद में लिखा जाता है, घटना पहले हो चुकी होती है। ऐसा वेदों में नहीं है। उसके शब्द यौगिक हैं, लौकिक नहीं। वेदों में किसी की भी जीवनकथा नहीं है।

ब्रह्म द्वारा वेदों को रचना, व्यास द्वारा संहिताओं को संग्रह किया जाना सदृश बातें करना भी मिथ्या है। एक बात और, वेदों से शब्द ग्रहण करके बाद में व्यक्तियों का नामकरण किया गया। यथामति अन्य जीवों, पदार्थों के नाम रखे गए।

इसी प्रकार सप्त ऋषि मण्डल के नक्षत्रों का नामकरण है, जो सात ऋषियों के नाम पर हुआ है। ये ऋषि ज्ञान, कर्म, उपासना, त्याग, तपस्या आदि गुणों में इतने श्रेष्ठतम हो गए कि उनके बाद उनकी स्मृति चिरस्थायी रखने के लिए सप्त नक्षत्रों का नामकरण उनके नाम पर कर दिया गया।

वर्तमान समय में जनपद-बाराबंकी, उत्तर प्रदेश में एक उपनगर है, जिसका नाम ''सतरिख'' है जो सप्त ऋषि का तद्भव रूप है। इसके किनारे नदी भी बहती है। ऐसा प्रसिद्ध है कि वे सप्तर्षि यहीं पर तपस्या करते थे।

लेखक ने सप्तर्षियों का तो वर्णन किया परन्तु 'ध्रुव' तारे की ओर उसका ध्यान नहीं गया। जिसका सप्तर्षि मण्डल के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। कहा जाता है कि भक्त ध्रुव अपनी तपस्या में स्थिर रहा, विचलित नहीं हुआ। अत एवं इस नक्षत्र का नाम 'ध्रुव' पड़ गया।

विवाह संस्कार में वर, वधू से कहता है—

वर-ध्रुवं पश्य॥ गोभिल गृ.सू. 2/3/9-11

हे देवी! इस ध्रुव तारे को देखो।

वधू-पश्यामि॥ मैं ध्रुव तारे को देखती हूँ।

वर-अरुन्धतीं पश्य॥ हे देवी! तुम इस अरुन्धती तारे को देखो।

वधू- पश्यामि।। मैं अरुन्धती तारे को देखती हूँ।

ध्रुवमसि ध्रुवन्त्या पश्यामि....॥

पारस्कर गृ.सू. 1/8/19

हे वर! जैसे आप ध्रुव तारे की भांति स्थिर हैं, वैसे ही मैं भी स्थिर हूँ। सप्तर्षि मण्डल में चार तारे चारपाई के पाए की तरह आगे और तीन तारे कुछ तिरछी पंक्ति में पीछे होते हैं। इनमें से बीच वाले तारे का नाम ''वशिष्ठ'' है, वशिष्ठ तारे के साथ ही कुछ कम चमकता हुआ तारा ''अरुन्धती'' है। अरुन्धती वशिष्ठ तारे के साथ ही गति करता है। अरुन्धती महर्षि की पत्नी का नाम था। जहां महर्षि वशिष्ठ ने सप्त ऋषियों में स्थान प्राप्त कर लिया, वहां अरुन्धती ने भी अपने तपोबल से वशिष्ठ की सहचरी के रूप में सप्तर्षि मण्डल में अपना स्थान बना लिया।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

पंडित लेखराम के बलिदान से प्रेरणा लेकर आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें

6 मार्च को अमर बलिदानी पं. लेखराम जी आर्य मुसाफिर का शहीदी दिवस है। आर्य समाज को इस बात का सौभाग्य प्राप्त है कि हिन्दुओं में दूसरी किसी धार्मिक संस्था ने अपने धर्म की रक्षा के लिए इतने शहीद पैदा नहीं किए जितने आर्य समाज ने। पं. लेखराम जी भी अपने धर्म के लिए मर मिटने वाले वीर थे। उन्होंने अपने बलिदान से आर्य समाज को एक नई प्रेरणा दी। पं. लेखराम जी का स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा और आदर से मस्तक झुक जाता है। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए उनकी अनवरत, अटूट श्रद्धा और पौराणिक, मुस्लिम और ईसाई मतों के आक्रमण का प्रबल प्रतिरोध ही उनके जीवन का स्वरूप था। अपने इसी जीवन की पूर्ति के लिए वे जीवन भर संघर्ष करते रहे और अन्त में अपना जीवन बलिदान कर गए।

पं. लेखराम जी महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने के लिए उन्होंने रात-दिन एक किया। अपने जीवन की, अपने परिवार की परवाह न करते हुए जहां पर भी, जिस समय भी उनकी आवश्यकता महसूस की गई तुरन्त सभी कार्यों को छोड़कर वहां पहुंचना उनकी धर्म के लिए अपार निष्ठा को दिखाता है। जिस जाति में, जिस धर्म में ऐसे धर्मनिष्ठ और वीर पुरूष होते हैं वही धर्म व जाति उन्नति करता है। आर्य समाज का यह सौभाग्य था कि उसे पं. लेखराम जैसा धुन का धनी व्यक्ति मिला। महर्षि दयानन्द जी ने जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी, उन्हें पूरा करने के लिए पं. लेखराम जी ने अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। पुलिस विभाग की नौकरी को छोड़ कर अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में उन्होंने उपदेश दिया कि आर्य समाज में तहरीर और तकरीर का काम बन्द नहीं होना चाहिए। पं. लेखराम जी एक निर्भीक प्रचारक थे। उन्हें बार-बार चेतावनी दी गई कि जिस विचारधारा का वह प्रचार कर रहा है उसे बन्द करें नहीं तो इसकी बहुत अधिक सजा मिलेगी। पं. लेखराम पर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। वह अपना काम करते गए और एक दिन वह भी आया जब उनकी हत्या कर दी गई। अपने बलिदान से पहले उन्होंने एक वसीयत की थी कि आर्य समाज से साहित्य निर्माण का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए और इसमें सन्देह नहीं कि आर्य समाज में साहित्य का निर्माण तो होता रहा परन्तु उस साहित्य का जो प्रचार-प्रसार होना चाहिए था, उस कार्य में आज हम पीछे रह गए हैं। साहित्य तभी लाभकारी हो सकता है जब उसे कोई पढ़ने वाला होगा। इसलिए महत्वपूर्ण कार्य प्रचार का है। आज अगर आवश्यकता है तो उस साहित्य, वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार की। अगर आज हम आर्य समाज का प्रचार करना चाहते हैं तो हमें अपने सामने एक लक्ष्य प्रस्तुत करना होगा। बिना लक्ष्य और उद्देश्य के कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता। पं. लेखराम जी ने कहा था कि आर्य समाज से साहित्य निर्माण का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए, वह बन्द तो नहीं हुआ परन्तु उसका जो प्रचार होना चाहिए था वह नहीं हो रहा है। इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। अपनी समस्याओं की ओर ध्यान देते हुए उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए। 6 मार्च को हम पं. लेखराम जी को याद करेंगे, उन्होंने जो कुछ किया था उसे हम सभी जानते हैं। परन्तु क्या इतने से ही हमारा कर्त्तव्य पूरा हो जाएगा? शहीदों का जीवन हमें क्या शिक्षा देता है? इस पर हमें विचार करना है। शहीदों का जीवन हमें एक ही शिक्षा देता है कि जब एक व्यक्ति अपने सामने एक लक्ष्य रख लेता है तो उसका यह भी कर्त्तव्य हो जाता है कि उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह जो कुछ भी कर सकता है करे। धर्मवीर पं. लेखराम की तरह बलिदान भी देना पड़े तो वह भी दें। पं. लेखराम जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में यही किया था। वे अपने सुखों को त्याग कर हमेशा धर्म के मार्ग पर चलते रहे।

6 मार्च को पं. लेखराम जी के शहीदी दिवस पर हम आर्य समाज की उन्नति और तरक्की के लिए शपथ लें। शहीदी दिवस तो हर वर्ष आता है और आ करके चला जाता है। परन्तु हमें विचार करना है कि हम अपने लक्ष्य और उद्देश्य में कहां तक सफल हुए हैं। हमने पं. लेखराम जी के जीवन से क्या शिक्षा ग्रहण की है? पिछले वर्ष के शहीदी दिवस से लेकर इस वर्ष के शहीदी दिवस तक हमने क्या किया है? इस पर हमें विचार करना है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमने अभी बहुत कुछ और करना है। हमारे शहीदों का बलिदान हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिन उद्देश्यों के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी, जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पं. लेखराम ने अपना बलिदान दिया था। उन महापुरूषों के बलिदान और कार्यों को व्यर्थ न जाने दें। आर्य समाज एक ऐसे वृक्ष के समान है जिसे अनेक बलिदानियों ने अपने बलिदान से तथा अनेक महापुरूषों ने अपनी प्रेरणाओं से सींचा है। आज हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि हम भी कुछ ऐसे कार्य करें कि आने वाली पीढ़ियां हमें भी याद करें। पं. लेखराम के बलिदान दिवस से प्रेरणा लेकर यदि हम आगे बढ़ सकें तो यही उन्हें हमारी सबसे बड़ी श्रद्धाजंलि होगी।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर में मासिक सत्संग

आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में श्रीमती स्वर्णा भसीन की स्मृति में मासिक विशेष सत्संग का आयोजन आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर पं. सत्यप्रकाश जी शास्त्री और पं.बुद्धदेव जी ने हवन यज्ञ करवाया। मुख्य यजमान श्रीमती लक्ष्मी राजदान ने यज्ञ में परिवार सहित आहुतियां प्रदान की। सरदार सुरिन्द्र सिंह गुलशन जी ने सुन्दर मधुर भजन सुनाकर वातावरण को संगीतमय कर दिया। रश्मि घई जी ने कण-कण में जो रमा है हर दिल में है समाया भजन सुनाकर ईश्वर महिमा का गुणगान किया। इसके बाद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से आए श्री सुरेश शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा कि इस संसार में सभी लोगों को निष्काम भाव से कर्म करते हुए श्रेय मार्ग पर चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि संसार में दो प्रकार के लोग होते हैं- एक वे जो केवल अपना पेट भरना जानते हैं और दूसरे प्रकार के लोग प्राणी मात्र के भले के लिए जीते हैं। समारोह की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी ने कहा कि बच्चों को अच्छे संस्कार देना माता-पिता का कर्त्तव्य है तथा अच्छे संस्कारों से परिवार अच्छे बनते हैं और अच्छे परिवारों से समाज तथा राष्ट्र की प्रगति होती है। उन्होंने सभी आए हुए महानुभावों का धन्यवाद किया। इस मासिक सत्संग के कार्यक्रम का आयोजन श्री बलदेव राज भसीन परिवार की ओर से किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री अजय महाजन, रवि महाजन, ओम प्रकाश महाजन, नवनीत भसीन, सविता भसीन, इन्द्रजीत सिंह भाटिया, रेणु भाटिया, कमलजीत सिंह पन्नू, रमेश चन्द्र साहनी, दीपक भसीन, आयुष्मान भसीन, सुखमन भसीन, राजेन्द्र कुमार पुरी, जोगिन्द्र भंडारी, सुदेश महाजन, रजनी सेठी, हिन्दपाल सेठी, सुशील चोपड़ा, बलदेव मैहता, रमेश चोपड़ा आदि उपस्थित थे। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम के पश्चात सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया। ऋषि लंगर का आयोजन भसीन परिवार की ओर से किया गया था।

-अजय महाजन मन्त्री आर्य समाज

thearyasamaj.org

महापुरुषों के प्रेरक एवं श्रद्धास्पद महर्षि दयानन्द

-ले० मनमोहन कुमार आर्य 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून

महर्षि दयानन्द महाभारत काल के बाद विगत पांच हजार वर्षों में वेदों के पहले ऋषि हुए हैं। उन्होंने वेदों का संस्कृत और हिन्दी में सत्य वेदार्थ वा भाष्य करके मानवता का जो उपकार किया है उसके लिए संसार उनका सदा सर्वदा ऋणी रहेगा। महर्षि दयानन्द को ही इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने सच्चे ईश्वर के स्वरूप को जनसामान्य तक प्रचारित ही नहीं किया अपितु जड़ देवी—देवताओं के यथार्थ स्वरूप से भी सबको परिचित कराया और बताया कि सभी देवी—देवताओं में उपासनीय केवल सृष्टिकर्ता सच्चिदानन्द-स्वरूप ईश्वर ही है। उन्होंने तर्कों व प्रमाणों से सिद्ध किया कि ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है। जो मनुष्य ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानने का प्रयत्न नहीं करते और यथासमय ईश्वरोपासना अर्थात् सन्ध्या वा योगाभ्यास नहीं करते वह कृतघ्न होते हैं। कृतघ्न इस कारण कि जिस ईश्वर ने हमारे लिए यह समस्त संसार वा ब्रह्माण्ड अर्थात् सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, वायु, जल, सुमद्र, नदियां, झरने, पर्वत, मैदान, रेगिस्तान, वन, वृक्ष, नाना प्रकार के फल-फूल बनाकर व इसमें मनुष्य का जन्म देकर माता-पिता-विद्वानों आदि से उपकृत किया है, उसे जानने का प्रयास न करना और जानकर उसकी स्तुति-प्रार्थना और उपासना न करना महा-कृतघ्नता है। हम यह भी जोड़ना चाहते हैं कि जो ईश्वर के सत्य स्वरूप को न जानकर अविधि से भक्ति वा उपासना करता है वह भी एक प्रकार से कृतघ्नों की श्रेणी में ही आता है। इसका कारण यह है कि जिस ईश्वर ने हमें इतने सुख व सुख की सामग्री प्रदान की है क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं बनता कि हम उसके यथार्थ स्वरूप को जानकर उपयुक्त विधि से उसकी उपासना करें ? जो ऐसा नहीं करते वह कृतघ्न ही कहे जा सकते हैं। अतः सभी मनुष्यों को ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानकर उसकी उपासना करनी चाहिये। ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानने व सही विधि से उपासना करने के लिए महर्षि दयानन्द लिखित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, व्यवहारभानु, गोकरूणानिधि सहित उनके जीवन चरित्र आदि का अध्ययन भी सहायक है एवं इनसे लाभ उठाना चाहिये और मानव जीवन को सफल कर जीवोन्नति करनी चाहिये जिससे अभ्युदय व निःश्रेयस की प्राप्ति हो सके।

प्रस्तुत लेख में हम महर्षि दयानन्द के विषय में देश के कुछ विद्वानों के विचार प्रस्तुत कर रहे हैं जिनसे उनके स्वरूप व व्यक्तित्व पर कुछ प्रकाश पड़ता है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा है कि महर्षि दयानन्द जी के उपदेशों ने करोड़ों लोगों को नवजीवन, नवचेतना और नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। देश की आजादी के लिए अपना जीवन एवं सर्वस्व समर्पित करने वाले और दो जन्मों के कारावास की सजा पाने वाले महान क्रान्तिकारी और देश भक्त वीर विनायक सावरकर जी ने कहा है कि महर्षि दयानन्द जी स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने राष्ट्र की महान सेवा की है और कर रहा है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का नाम जिह्वा पर आते ही हृदय उनके उपकारों व देशभक्ति के कार्यों को स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा से भर जाता है। वह वस्तुतः भारत माता के अनूठे, महान, परम देशभक्त सपूत थे और उन्होंने अपना सर्वस्व भारत माता को अर्पित किया। वह महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की प्रशंसा करते हुए कहते है कि संगठन कार्य, दृढ़ता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई नहीं कर सकता। महर्षि दयानन्द के विषय में श्री अनन्तशयनम् आयंगर जी ने लिखा है कि गांधी जी राष्ट्र के पिता थे, तो महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के पितामह थे। श्री आयंगर जी के इस कथन के आधार पर हम यहां कहना चाहेंगे कि श्री आयंगर जी ने जितना महर्षि दयानन्द को समझा था उतना किसी राजनैतिक दल व उसके नेता ने उन्हें नहीं समझा अथवा महर्षि दयानन्द जिस सम्मान के अधिकारी थे, राजनैतिक कारणों से वह उनको प्रदान नहीं किया गया।

देश की आजादी में लाला लाजपतराय जी का महान योगदान है। शहीद भगत सिंह ने लाला जी पर अंग्रेजों के अत्याचारों के कारण ही सांडर्स को अपनी पिस्तौल का निशाना बनाया था जिसमें शहीद चन्द्रशेखर आजाद, शहीद सुखदेव, शहीद राजगुरू, आजादी की जीवित शहीद दुर्गाभाभी व अन्य अनेक क्रान्तिकारी सम्मिलित थे। लाला लाजपतराय जी लिखते हैं कि स्वामी दयानन्द जी मेरे गुरु हैं। मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है। वे मेरे धर्म के पिता हैं और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है। भारत के प्रथम उपप्रधान मंत्री और तेजस्वी व यशस्वी गृहमंत्री लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने भी महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि देते हुए कहा है कि मैं ऋषि दयानन्द जी को अपना राजनैतिक गुरू मानता हूं। मेरी दृष्टि में तो ये महान विप्लववादी नेता और राष्ट्र विधायक थे। हम सभी यह जानते हैं कि लगभग ६०० स्वतन्त्र रियासतों सहित कश्मीर का भारत में विलय कराने में सरदार पटेल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका थी। यदि वह राजनीति में न होते तो कह नहीं सकते कि स्वतन्त्र भारत का स्वरूप क्या होता परन्तु यह निश्चित है कि जो अब है वह कदापि न होता क्योंकि अनेक रियासतें या तो स्वतन्त्र रहती या पाकिस्तान आदि में अपना विलय करती जो कश्मीर की ही तरह भारत के लिए सिरदर्द का काम करती। देश की आजादी के एक और प्रमुख नेता और क्रान्तिकारी देवतास्वरूप भाई परमानन्द ने भी महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। भाई परमानन्द जी जब अफ्रीका में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ गये थे तो महात्मा गांधी ने वहां उनके दर्शन कर सान्निध्य प्राप्त किया था और श्रद्धावश उनका बिस्तर अपने कंधे वा सिर पर उठा लिया था। परमानन्द जी ने लिखा है कि स्वामी दयानन्द एक ऐसे प्रकाश के स्तम्भ हैं जिन्होंने असंख्य मनुष्यों को सत्य का मार्ग बतलाया है। मैं अपने को उनका अनुयायी कहलाने में गर्व अनुभव करता हूं।

यह भी उल्लेखनीय है कि आजादी के आन्दोलन में काकोरी काण्ड के विख्यात मास्टरमाइण्ड शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल उनकी साक्षात शिष्य परम्परा में थे। शहीद अशफाक उल्ला खाँ के साथ उनकी मित्रता व सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध जातीय वा कौमी एकता का प्रशंसनीय उदाहरण है। यह भी तथ्य है कि देश की आजादी के आन्दोलन में लगभग ८० प्रतिशत आन्दोलनकारी महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित होते थे। क्रान्तिकारियों के अग्रणीय व आद्यगुरु व आचार्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा भी उनके साक्षात् शिष्य थे व उन्हीं की प्रेरणा से इंग्लैण्ड गये थे। उनकी परम्परा में वीर सावरकर एवं अन्य क्रान्तिकारी हुए हैं। महाराष्ट्र के महादेव गोविन्द रानाडे महर्षि दयानन्द के साक्षात शिष्य थे। आपने ही उन्हें पूना में आमंत्रित कर उनके प्रवचन कराये थे। श्री रानाडे गोपालकृष्ण गोखले के राजनैतिक गुरु थे और गोखले जी के शिष्य महात्मा गांधी थे। इस प्रकार हम देखते हैं देश की आजादी की नरम व गरम दोनों धाराओं के आद्यगुरु महर्षि दयानन्द थे। इस आधार पर कांग्रेस के नेता श्री अनन्तशयनम् आयंगर जी का महर्षि दयानन्द को देश का पितामह कहना सर्वथा उचित व युक्तिसंगत है। अमेरिकन महिला मैडम बेलेवेटेस्की ने उनको श्रद्धांजलि देते हुए कहा था कि जब भारत में आजादी का मन्दिर बनेगा तो उसमें सबसे सच्ची मूर्ति महर्षि दयानन्द की होगी।

thearyasamaj.org

महात्मा चैतन्यमुनि भुवनेश्वर, ओडिसा में महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान से सम्मानित

आर्य जगत् के वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता व आनन्दधाम आश्रम उधमपुर, जम्मू-कश्मीर के मुख्य संरक्षक व निदेशक तथा अन्य अनेक आश्रमों, साहित्यिक संस्थाओं के संचालक एवं संरक्षक महात्मा चैतन्यमुनि जी को भुवनेश्वर, ओडिसा में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान लाला लाजपत राय जी द्वारा स्थापित लोक सेवक मण्डल के राष्ट्रीय सचिव श्री दीपक मालव्य जी द्वारा प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि महात्मा जी की अब तक लगभग पच्चास साहित्यिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं तथा इन्हें अब तक साहित्य अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्यवीर संचालक, वेद प्रचार अधिष्ठाता, महामन्त्री तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष व कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में इन्होंने अभूतपूर्व सेवा की है जिसके लिए इन्हें सभा की ओर से सम्मानित भी किया गया था। सभा की पत्रिका आर्य वन्दना के सम्पादन से ये बीस वर्षों से जुड़े रहें। पत्रिका आरंभ करने तथा इसे प्रतिष्ठिता प्रदान करने में इनका अत्याधिक सहयोग रहा है। इन्होंने वैदिक वशिष्ठ पत्रिका, शब्द, नवनीत भारती तथा गूंजती घाटियां आदि पत्रिकाओं में भी सम्पादन सहयोग प्रदान किया है। ये एक प्रतिष्ठित लेखक ही नहीं बल्कि प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता भी हैं जिन्होंने मानव मूल्यों की स्थापना हेतु देश-विदेश में वैदिक संस्कृति की सार्वभौमिक विचारधारा को अत्याधिक प्रभावशाली ढंग से प्रचारित एवं प्रसारित किया है।

-प्रबन्धक एवं प्रैस सचिव

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्यपाद महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 11 से 19 अप्रैल-2015 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे तथा योगदर्शन-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित आचार्य श्री सन्दीप आर्य जी, प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। डा. सुरेश जी योग द्वारा रोगोपचार भी करेंगे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्मा जी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं। इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. 09419107788, 09419796949 अथवा 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

महर्षि का जन्म दिवस मनाया

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस 14 फरवरी 2014 को स्कूल प्रांगण में मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यकारी सदस्यों श्री डॉ. सूर्यकान्त शोरी तथा श्री भारत भूषण मैनन के निर्देशानुसार प्रोग्राम सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम आर्य समाज के पुरोहित पण्डित रणजीत शास्त्री द्वारा विशेष आहुतियों से हवन यज्ञ करवाया गया। विद्यार्थियों द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। स्कूल प्रिंसीपल राम कुमार सोबती ने विद्यार्थियों को स्वामी दयानन्द के जीवन एवं कार्यों पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी तथा स्वामी जी ने समाज एवं देश के लिए किए कार्यों के बारे बताया। उसके बाद रणजीत शास्त्री जी ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर राम चन्द्र आर्य, प्रवीण कुमार, प्रमोद कुमार, वीरेन्द्र कुमार, मैडम सुमन, मैडम मीनाक्षी, मैडम निर्मला के अतिरिक्त स्कूल स्टाफ एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। शांति पाठ उपरान्त प्रोग्राम सम्पन्न हुआ।

-राम चन्द्र आर्य

पृष्ठ 2 का शेष- वेदों के.....

इसीलिए जैसे वशिष्ठ तारे के साथ ही अरुन्धती तारा स्थित रहते हुए गति करता है, वैसे ही तुम भी मेरे साथ गृहस्थ आश्रम में स्थित रहते हुए जीवन व्यतीत करो।

सप्तर्षि मण्डल के चार तारों के अगले दो तारों की सीध में कुछ दूरी पर उत्तर दिशा में ध्रुव तारा स्थित होता है। सप्तर्षि मण्डल ध्रुव तारे की परिक्रमा करता रहता है जो 24 घण्टे में पूरी हो जाती है। यह कभी रात्रि के आरम्भ, कभी मध्य और कभी ब्रह्ममुहूर्त में कालक्रमानुसार देखा जा सकता है।

वैसे सप्तर्षि मण्डल के सम्मुख ध्रुव तारे के दूसरी ओर W डब्ल्यू आकार में पांच तारे भी चक्कर लगाते हैं। ये सप्तर्षि मण्डल और पंचर्षि मण्डल दोनों परस्पर आमने सामने रहते हुए ध्रुव तारे की परिक्रमा करते रहते हैं।

सप्तर्षियों के नामों के सम्बन्ध में लेखक का कहना है-

''वेदों का अध्ययन करने पर जिन सात ऋषियों का पता चलता है वे इस प्रकार हैं.....।''

परन्तु लेखक ने वेद में इनका पता नहीं दिया है। विभिन्न पुराणों में ऋषियों के उपलब्ध नामों का भी उल्लेख किया है। इस बारे में यही कहा जा सकता है- मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना, तुण्डे तुण्डे सरस्वती अर्थात् जितने मुंह उतनी बातें।

लेखक ने पुराणों में वैभिन्य स्वयं ही दर्शाया है। वस्तुत: पुराणें प्रामाणिक नहीं। क्योंकि नाम तो इनका पुराण है परन्तु ये हैं अत्यन्त अर्वाचीन। यहां तक कि भविष्य पुराण तो अंग्रेजों के समय की रचना है-

रविवारे च सण्डे च फाल्गुणे चैव फरवरी।
षष्टिश्च सिक्सटिर्ज्ञेय: इत्युदाहरणमीदृशम्॥

इसमें सण्डे, फरवरी, सिक्सटी नाम अंग्रेजी के हैं, जिससे इनकी अर्वाचीनता स्वत: सिद्ध है।

राजा दशरथ के कुलगुरु वशिष्ठ वेदों के वशिष्ठ नहीं हैं। वाल्मीकि रामायण की रचना वैदिक संस्कृत में न होकर लौकिक संस्कृत में है। रामायण त्रेता युग की रचना है जबकि इससे पूर्व सत्ययुग भी तो बीत चुका था। रामायण काल में व्यवहार की भाषा लौकिक संस्कृत थी। परन्तु ऋषि-मुनि एवं विद्वान् वैदिक संस्कृत से परिचित थे, वेदवेत्ता थे। अत: वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि का सम्बन्ध वेद-ऋषि और वैदिक काल से नहीं है। वैसे ही सीता, अनुसूया भी रामायण कालीन हैं। अन्य उल्लिखित ऋषि भी परवर्ती हैं, वेदमन्त्रों के द्रव्य नहीं।

इस प्रकार वेदमन्त्र के सूक्तों पर वर्णित ऋषियों का विभिन्य लेखक द्वारा लिखित ऋषियों से पूर्णत: स्पष्ट है। क्योंकि लेखक के ऋषि ऐतिहासिक हैं, जबकि वेदों में इतिहास नहीं है, यह पूर्व में ही स्पष्ट किया जा चुका है।

पृष्ठ 4 का शेष- महापुरुषों के.....

हम अपने अध्ययन के आधार पर यह कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द जैसा देशभक्त, ईश्वरभक्त, वेदभक्त, मानवमात्र का हितैषी, सत्यप्रेमी, असत्यद्वेषी, वेदप्रचारक, वेदर्षि, महर्षि, आप्तपुरुष, योगेश्वर, ईश्वर के सच्चे स्वरूप का अनुसंधानकर्ता व प्रचारक, वेदों का उद्धारक, अवैदिक मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, सभी धार्मिक अन्धविश्वासों व मांसाहार आदि असत्य कार्यों का विरोध व खण्डनकर्त्ता, स्वराज्य—सुराज्य का मन्त्रदाता एवं पोषक, वैदिक अहिंसक यज्ञों के पुनरोद्धारक प्रचारक व उन्हें वैज्ञानिक आधार पर स्थापित करने वाला, मानवमात्र के हितैषी भगवान मनु पर लगाये गये मिथ्या आरोपों व दोषों से उन्हें मुक्त व निर्दोष सिद्ध करने वाला, स्त्रियों की शिक्षा, उनके स्वयंवर विवाह, स्त्रियों का वेदाध्ययन, उनको ऋषि का बनाने का मार्ग प्रशस्त करने वाला व उन्हें पुरुषों के समान वरन् उनसे कुछ अधिक अधिकार प्रदान करने वाला, शूद्रों, श्रमिकों, निर्धनों व किसानों का सच्चा समर्थक, हितैषी व उद्धारकर्ता तथा उन्हें वेदाध्ययन का अधिकार देकर उन्हें मानव समाज के शिखर पुरुष अर्थात् ऋषि—ब्राह्मण बनाने का अवसर देने वाला उनके समान अन्य महापुरुष देश व संसार में दूसरा नहीं हुआ। उनके सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका एवं वेदभाष्य आदि ग्रन्थों से शिक्षा व प्रेरणा ग्रहण कर व उसे क्रियान्वित कर ही हमारा देश संसार का गुरु बन सकता है। इन्हीं पक्तियों के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

thearyasamaj.org

आर्य समाज मन्दिर धारीवाल में ऋषि बोध उत्सव

आर्य समाज मंदिर धारीवाल में ऋषि जन्मोत्सव व शिवरात्रि पर्व बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया गया। आज 18.02.2015 को आर्य समाज मंदिर में हवन यज्ञ के उपरांत प्रधान श्री जगदीश मित्र आर्य ने ऋषि (स्वामी) दयानन्द जी के 191वें जन्म दिवस पर उनके जीवनी पर रोशनी डाली तथा ऋषि द्वारा आर्य समाज की स्थापना करके सारे विश्व में वेद के ज्ञान का प्रचार करके व समाज में तरह-तरह की भ्रांतियों को समाप्त करने के लिए अपना पूरा जीवन लगाया व अनेकों कष्ट सहन कर संसार का उपकार किया और बालक मूल शंकर शिवरात्रि की रात्रि को सच्चे शिव की तलाश में अपने घर तथा परिवार को छोड़कर जीव आत्मा उस सच्चे ईश्वर की प्राप्ति के लिए तप और त्याग द्वारा अपने जीवन में अनेकों कष्टों का मुकाबला करते हुए मूल शंकर से स्वामी दयानन्द बन गया। आज सारा विश्व उनके द्वारा मिले हुए ज्ञान की पेरवी कर रहा है। उन्होंने अपने जीवन में शुद्धि प्रचार, स्त्री शिक्षा, बाल विवाह तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों को समाप्त किया तथा विश्व को वेद के अनुसार चलाने की प्रेरणा दी परन्तु इस समय शिक्षा का प्रसार और प्रचार होते हुए भी भारत में भ्रूण हत्या तथा नशों की लत से समाज बुरी तरह ग्रस्त है इस युग में भी स्वामी की शिक्षाओं के प्रचार की बहुत ज़रूरत है। मानव धर्म पर चलने के लिए आर्य समाज को इस ओर विशेष ध्यान देकर ऋषि की तरह वेद का प्रचार तथा प्रसार करके परोपकार की भावना से लोगों में जागृति लाने का विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। हम सच्चे तौर पर तभी ऋषि के अनुयायी हो सकते हैं कि उनके बोध उत्सव पर हम सब प्रण लें कि हम उनके द्वारा दी गई प्रेरणा का सारे विश्व में प्रचार व प्रचार करके अपने कर्त्तव्य की पालना करते हुए उनके ऋण से उऋण होवे। आज का दिन हमें महान भावी के पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा देते हैं। उसके उपरान्त श्री सोमनाथ जी ने मधुर भजनों का गायन किया। शांति पाठ के उपरांत प्रसाद तथा चाय आदि का वितरण किया गया।

-यश महाजन महामंत्री

सुखमय गृहस्थी के लिए सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ें

ऋषि बोधोत्सव पर्व पर ज़िला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा द्वारा शिवपुरा भीतरिया कुण्ड में आयोजित सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन में 27 नवदंपत्तियों को महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश विधायक प्रहलाद गुंजल के कर कमलों से भेंट किए गए। इस अवसर पर आर्य समाज के ज़िला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने कहा कि सुखमय गृहस्थी के लिए सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ना चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश मानव जीवन में अंधविश्वास, अज्ञान, अशिक्षा को दूर कर ज्ञान का प्रकाश करता है।

इस अवसर पर आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान जे. एल. दुबे, आर्य विद्वान्, डी. ए. वी. स्कूल के धर्मशिक्षक शोभाराम, आर्य समाज रामपुरा के चन्द्रमोहन कुशवाह आदि उपस्थित थे।

अर्जुनदेव चढ्डा सम्मानित

स्वच्छ भारत-स्वस्थ्य भारत अभियान के अन्तर्गत नए कोटा में स्थित माहेश्वरी पब्लिक स्कूल द्वारा अन्य विद्यालयों की सामूहिक रैली निकाली गई।

स्वच्छता अभियान, साईकिल रैली को विधायक प्रहलाद गुंजल ने झण्डी दिखाकर रवाना किया। कई वार्डों में घूमती हुई रैली वापस विद्यालय प्रांगण में पहुंची।

विद्यालय के सभा भवन में आयोजित कार्यक्रम में समाजसेवियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ समाज सेवी व आर्य समाज के ज़िला प्रधान अर्जुन देव चढ्डा को विधायक प्रहलाद गुंजल, विधायक संदीप शर्मा, महापौर महेश विजय एवं पूर्व महापौर श्रीमती सुमन श्रृंगी ने स्मृति चिन्ह व प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित किया गया।

-अरविन्द पाण्डेय

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस सम्बन्धी समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस आर्य समाज ओहरी चौक में मनाया गया जिसमें सर्वप्रथम हवन यज्ञ के बाद विशेष कार्यक्रम का आगाज आर्य गर्ल्ज सी.सै. स्कूल व आर्य मॉडल स्कूल के बच्चों ने महर्षि के जीवन को समर्पित प्रस्तुतियां प्रस्तुत कर दिया। विशेषातिथि विश्व हिन्दू परिषद के क्षेत्रीय नेता जितेन्द्र नाथ शर्मा ने कहा कि समाज हमेशा उस महापुरुष का ऋणी रहेगा जिसने जहां धार्मिक क्षेत्र में वेद शिक्षा को अपनाने की बात की वहीं बड़े जोरदार ढंग से सामाजिक कुरीतियों से लड़ने के प्रति हमें प्रेरित किया। आर्य समाज के अध्यक्ष परविन्द्र चौधरी व पुरोहित शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने स्वतन्त्रता संग्राम के लिए जो लौ जगाई थी, उसी से प्रभावित होकर न जाने कितने लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी जिनमें शेर-ए-पंजाब लाला लाजपत राय, शहीद-ए आजम भगत सिंह, शहीद राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद वीर सावरकर आदि शामिल थे।

इस मौके पर आर्य समाज द्वारा 16 विधवाओं व बेसहारा बहनों को मासिक राशन भी वितरित किया गया। इस दौरान आर्य समाज के विशिष्ट सदस्य रत्न लाल चंडोक, विजय अग्रवाल, अशोक अग्रवाल, के.सी. सच्चर, बलविन्द्र मेहता, वीरेन्द्र विग, सुमित भारद्वाज, प्रेम शर्मा, पवन शर्मा, के.एल. गुप्ता, सोहन लाल प्रभाकर, इन्द्र सानन, जसविन्द्र मेहता, कृष्ण महाजन, सुरिन्द्र शर्मा के अलावा स्त्री समाज के शशि अग्रवाल, चन्द्रकांता, प्रिंसीपल सोनिया सच्चर प्रिंसीपल रजनी बहल भी उपस्थित थी।

-आर्य समाज ओहरी चौक, बटाला

प्रवेश-सूचना

सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि वैदिक गुरुकुल विद्यापीठ खेरली जिला अलवर (राज०) पिछले चार वर्षों से निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। गुरुकुल में नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश-प्रारम्भ हो गया है। गुरुकुल विद्यापीठ खेरली में गुरुकुल झज्जर से सम्बन्धित महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट आर्ष प्रणाली से अध्ययन करवाया जाता है। शिक्षा व व्यवहारिक भाषा का माध्यम संस्कृत है। संस्कृत वेद, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक ज्ञान आदि सभी विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों द्वारा करवाया जाता है। अध्ययन की अच्छी व्यवस्था के साथ ही शारीरिक व्यायाम की उत्तम व्यवस्था है आत्मिक उन्नति के लिये आर्य कुमार सभा तथा शारीरिक विकास के लिये आर्यवीर दल स्थापित है। जिसमें विविध भारतीय व्यायाम, स्फूर्ति दायक व्यायाम, योगासन, प्राणायाम, दौड, मल्लयुद्ध (कुश्ती), कबड्डी, लाठी, शूल, खडग, मल्ल खम्भ, नियुद्धम् आदि के प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था है। गुरुकुल में प्रथमा (छठी) कक्षा से शास्त्री पर्यन्त अध्यापन की व्यवस्था है। अत: आप सब सज्जनों से अनुरोध है कि जब तक वैदिक धर्म का प्रचार था तब तक भारत चक्रवर्ती सम्राट व विश्व गुरु के रूप में पूजित था। इसलिये पुन: वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु अपने-अपने क्षेत्र से संस्कृत प्रेमी सुयोग्य छात्रों को प्रवेश हेतु गुरुकुल में भेजने की कृपा करें। प्रवेश 6, 7, 8 कक्षा में ही प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद होगा। चारित्रिक विकास तथा शारीरिक आत्मिक सामाजिक उन्नति के लिये गुरुकुल की आर्ष शिक्षा आवश्यक है।

पंजाबी जनसेवा समिति ने राजकीय विद्यालय में बांटे पुरस्कार

जागरुक पाठकों की विनम्र पहल पर स्वच्छता के प्रति जागरूकता के लिए "स्वच्छ रहे स्वस्थ रहें" साप्ताहिक अभियान में कोठरी हरिजन बस्ती स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में पंजाबी जनसेवा समिति कोटा की टीम पहुंची। स्कूल इंचार्ज से परमिशन के बाद बच्चों से स्वच्छता सम्बन्धित सवाल पूछे गए। टीम ने स्कूल यूनिफार्म में साफ सुथरी कक्षा 8 की छात्रा कायनात और कक्षा 6 की नेहा के सुन्दर दांत पर पुरस्कार दिया गया। वहीं, दूसरी और तीसरी कक्षा की छात्रा सिमरन की सुन्दर चोटी, इसी तरह से अन्य छात्र छात्राओं से सफाई रखने के प्रश्न पूछे गए। 10 छात्र छात्राओं को पंजाबी जनसेवा समिति की ओर से पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

समिति के अध्यक्ष अर्जुन देव चढ्डा ने कहा कि समिति द्वारा समाज सेवा करके अपना सामाजिक कर्त्तव्य निभाया जा रहा है। आज टीम में समिति की महिला विंग की संरक्षक श्रीमती कृष्णा वाधवा, उपाध्यक्ष श्रीमती सीमा पिपलानी, श्रीमती प्रियंका अदलक्खा, श्रीमती पूनम चढ्डा उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मंजू साहनी ने किया।

-अर्जुनदेव चढ्डा

thearyasamaj.org

शोक सन्देश

आदरणीय माता सावित्री खन्ना जी (पत्नी स्व: श्री सोहन लाल जी खन्ना) के निधन पर महर्षि दयानन्द मठ (वेद मंदिर) ढन्न मुहल्ला गहरा दु:ख प्रकट करता है। पूज्य माता जी महर्षि दयानन्द मठ-आर्य समाज विक्रमपुरा और जालन्धर आर्य समाज अड्डा होशियारपुर के कार्यक्रम पर अवश्य पहुंचती थीं। उन्हें आर्य समाज के प्रति लगाव-आस्था अपने स्व: पिता जी से प्राप्त हुई। इसी प्रकार वही संस्कार माता जी ने अपने बच्चों को दिए। उनके पुत्र श्री जतिन्द्र मोहन खन्ना एवं सातों बेटीयों को और आगे बच्चों को उन्होंने संस्कार दिए सराहनीय है। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें पं. सत्य प्रकाश जी शास्त्री (आर्य समाज मॉडल टाऊन) ने प्रवचन किया- माता जी की बेटी (पूना से) श्री मनोरंजन कालिया जी पूर्व मन्त्री पंजाब और श्री कुन्दन लाल अग्रवाल प्रधान महर्षि दयानन्द मठ ने पूज्य माता जी के चरणों में श्रद्धांजली अर्पित की और प्रभु से इस वात्सल्य मई माता को अपने चरणों में स्थान देने परिवार को यह विछोह सहने हेतु प्रार्थना की। शोक सभा में राजनीतिक व धार्मिक गणमान्य-विधायक श्री मनोरंजन कालिया-कौंसलर श्री अमरजीत सिंह अमरी-कांग्रेस के श्री राजेन्द्र बेरी-प्रिं: रश्मि विज, श्री सुनील विज, रवि मित्तल, श्री मति सुदेश मित्तल, माता आनन्दयति, श्री राजेन्द्र विज, इन्द्र शर्मा, सत्य शरण गुप्ता, श्री विनोद सेठ, रमेश कालरा, अरूण कोहली, श्री बालकृष्ण अरोड़ा सहित भारी संख्या में गणमान्य लोग आए।

-सत्य शरण गुप्ता

डा. बीडी धवन का इंटरनैशनल बायोग्राफिकल सेंटर ने किया सम्मान

आर्य समाज के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् व डिप्टी राज्य सैक्रेटरी राज्य सरकार डॉ. बीडी धवन को इंटरनैशनल बायोग्राफिकल सेंटर द्वारा 2015 के विश्व के टॉप 100 प्रोफेशनल में शामिल किया गया। यह सम्मान उन्हें साहित्य में दिए गए योगदान के मद्देनजर और अंग्रेजी और हिन्दी में साहित्य सृजन की सेवाओं के लिए दिया गया। उनकी प्रसिद्ध किताबों में स्प्रिच्युअल एक्सलरेशन, ओम आनन्दवर्धन आदि हैं। अंतराष्ट्रीय संस्था का मुख्य सेंटर इंग्लैंड में है। इसने टॉप 100 प्रोफेशनल में डॉ. बीडी धवन को 2015 के लिए शामिल किया है। इसलिए रविवार को आर्य समाज पंचकूला ने भी उनका सम्मान किया।

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज जालन्धर छावनी का साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन दिनांक 8-2-2015 रविवार को प्रांत: 9.30 बजे वार्षिक निर्वाचन हेतु आर्य समाज मन्दिर में हुआ जिसमें वार्षिक आय व्यय का ब्योरा पेश किया गया जिसे सर्वसम्पत्ति से स्वीकृत किया गया। इसके पश्चात् निर्वाचन की प्रक्रिया श्री कृष्ण लाल गुप्ता जी की अध्यक्षता में हुई। प्रधान पद के लिए श्री चन्द्र गुप्ता जी का नाम श्री जवाहर लाल महाजन ने प्रस्तुत किया जिसका श्री अशोक शर्मा जी ने अनुमोदन किया। अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार भी सर्वसम्मत्ति से प्रधान श्री चन्द्र गुप्ता जी को दिया गया।

साधारण सभा के अधिवेशन के आधार पर दिये गये अधिकार के अनुसार निम्नलिखित पदाधिकारियों की नियुक्ति तथा अन्तरंग सभा का गठन किया।

वरिष्ठ उपप्रधान श्री गणपत राय सोनी, श्री कृष्ण लाल गुप्ता, उपप्रधान, श्री अशोक जावेद, श्री धर्मेन्द्र अग्रवाल, मंत्री श्री जवाहर लाल महाजन, श्री रघुवीर सिंह जादौन उपमंत्री श्री अयोध्या प्रसाद अग्रवाल, श्री मुनीष महाजन, कोषाध्यक्ष श्री अशोक शर्मा, श्री चन्द्र शेखर लेखा निरीक्षक पुस्तकाध्यक्ष श्री रघुनाथ ठाकुर, श्री सूरज प्रकाश अग्रवाल आर्य युवा शक्ति प्रमुख श्री संदीप सेठी, श्री संजीव गुप्ता कानूनी सलाहकार अधिष्ठाता आर्य वीर दल श्री, सुरेन्द्र मोहन लाल।

-मंत्री जवाहर लाल महाजन

स्वाईन फ्लू की रोकथाम के लिए सैमीनार

आर्य समाज बरनाला द्वारा समाज में स्वाईन फ्लू नामक बिमारी की रोकथाम हेतु बरनाला की शिक्षण संस्थाओं में सैमीनार लगाए जा रहे हैं। इस कड़ी में आज गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में सैमीनार का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यकारी सदस्य डॉ. सूर्य कान्त शोरी तथा भारत भूषण मैनन, डॉ. यादविन्द्र कौर तथा एल.बी एस कालिज के प्राध्यापक शामिल हुए। स्कूल प्रिंसीपल राम कुमार सोबती तथा समूह स्टाफ ने स्वागत किया। सम्बोधित करते हुए वक्ताओं ने स्वाईन फ्लू बिमारी से न डरने बल्कि सावधानियां रखने हेतु विद्यार्थी एवं अध्यापकों को बताया कि इस बिमारी से भारत वर्ष में सैंकड़ों मौतें हुई हैं। इसलिए इसका इलाज अवश्य कराना चाहिए। लक्षण बताते हुए उन्होंने कहा कि सूखी खांसी, सिर दर्द, शरीर में दर्द, कांपना, जोड़ों में दर्द, गले का पकना, नाक बहना व उल्टीयां लगना आदि। बचाव हेतु हाथों को बार बार धोना, बिमार लोगों के पास न जाना, रूमाल का प्रयोग करना, हर समय मुंह, नाक, आंखों को न छूना, किसी भी समस्या पर डाक्टर से सम्पर्क कायम करना। विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए इस बिमारी से बचने के उपाय बताए गए। अन्त में स्कूल प्रिंसीपल ने सभी का धन्यावाद किया। इस अवसर पर प्रवीण कुमार, कमलेश कुमारी, नवीना रानी, निर्मला देवी, मीनाक्षी जोशी, सुमन जिन्दल, सुनीता गौतम, रवनीत एवं स्कूल के अन्य अध्यापक व विद्यार्थी उपस्थित थे।

गुरुकुल हरिपुर (ओड़िशा) का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण शान्त-कान्त-एकान्त वातावरण में स्थित गुरुकुल हरिपुर जुनानी (ओड़िशा) का पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं वार्षिक महोत्सव करूणावरूणालय प्रभु की असीम अनुकम्पा, पूज्य सन्तों व विद्वज्जनों के सान्निध्य एवं ओड़िशा, छ.ग. बंगाल, दिल्ली, म.प्र.उ.प्र. आदि प्रान्तों से आगन्तुक श्रद्धालु हजारों नर-नारियों की पावन उपस्थिति में 30,31 जनवरी व 1 फरवरी 2015 को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

त्रिदिवसीय सम्पूर्ण कार्यक्रमों का उद्घाटन गुरुकुल के यशस्वी प्रधान, सात्विक मनोभाव से ओत-प्रोत आदरणीय श्री जयदेव आर्य राजकोट के शुभकरकमलों से ध्वजोत्तोलन पूर्वक प्रारम्भ हुआ।

महोत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती गुरुकुल आमसेना, पूज्य स्वामी अमृतानन्द सरस्वती (म.प्र.) डॉ. शिवदत्त पाण्डे (उ.प्र.) आचार्य अंशुदेव प्रधान-छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रति. सभा दुर्ग, गुरुकुल के संरक्षक श्री खुशहालचन्द्र आर्य कोलकाता, आचार्य राहुलदेव शास्त्री, डॉ. कैलाशचन्द्र शास्त्री एवं ओड़िशा के अनेक साधु-सन्तों विद्वान् उपस्थित होकर सबको प्रेरित, लाभान्वित किये।

गुरुकुल के कुलपिता श्री सुरेश चुघ एवं माता श्रीमती विजयलक्ष्मी चुघ दिल्ली के संयोजकत्व में नुआपड़ा जिला के विभिन्न विद्यालयों से आये हुये छात्र-छात्राओं का क्रमश: चित्रांकन, भाषण, संगीत एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया जिसमें प्रतिदिन 300-350 प्रतियोगी भाग लिये, समापन अवसर पर विजयी छात्रों को पारितोषिक व प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

महोत्सव के अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के द्वारा वाणी एवं पाणि प्रतिभा प्रदर्शन हुआ। गुरुकुल के पंचम वर्ष पूर्ति होने पर गुरुकुल से प्रकाशित पंचायतन स्मारिका, मनुष्य जीवन का उद्देश्य, आर्य समाज का संक्षिप्त परिचय, दैनिक अग्निहोत्र आदि प्रचार पत्रकों का विमोचन कार्यक्रम श्री केदार कश्यप शिक्षा मन्त्री छ.ग. शासन, श्री पुष्पेन्द्र सिंहदेव नगर उन्नयन मन्त्री ओड़िशा सरकार, श्री बसन्त कुमार पण्डा, विधायक नुआपड़ा, श्री राजुभाई धोलकिया, श्री प्रसन्न पाढ़ी एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि आदि महानुभावों के शुभकरकमलों से सम्पन्न हुआ।

त्रिदिवसीय समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य के मार्गदर्शन में तथा समस्त आचार्यों, अधिकारियों, सहयोगी कार्यकर्ताओं के पुरुषार्थ से सुसम्पन्न हुआ।

thearyasamaj.org

 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17 RNI No. 26281/74

आर्य समाज सरहिन्द में ऋषि बोधोत्सव पर्व मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर सरहिन्द जिला फतेहगढ़ साहिब में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस एवं ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम 14 से 17 फरवरी तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर भजनोपदेशक पं. राजिन्द्र जी लुधियाना वाले व श्री मोहन लाल जी शास्त्री जम्मू के मधुर भजन तथा डा. राम कृष्ण आचार्य जी दिल्ली वालों ने वेदोपदेश द्वारा ऋषि महिमा का गुणगान किया।

16 फरवरी को एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। इस शोभा यात्रा को श्री सुधीर शर्मा जी कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने झण्डी दिखाकर रवाना किया। शोभा यात्रा का प्रतिनिधित्व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम कुमार भारद्वाज जी ने किया। शहर के विभिन्न बाजारों में इस शोभायात्रा का स्वागत किया गया और फूलों की वर्षा की गई। रास्ते में जगह-जगह पर जलपान का भी प्रबन्ध था। इसमें कई झांकियां सम्मिलित थी। चारों वेदों को ससम्मान फूलों से सजा कर रखा गया था। आर्य समाज के पुरोहित श्री हेम सिंह जी हवन यज्ञ करवाते हुए एक अन्य झांकी में सम्मिलित थे। महर्षि दयानन्द हाई स्कूल के बच्चों द्वारा अलग-अलग झांकियां बनाई गई थी। बच्चो ने ऋषि दयानन्द के जयघोषों से वातावरण को गुंजायमान कर रखा था एवं भजनों द्वारा भी ऋषि गुणगान किया जा रहा था। ओ३म् के झण्ड़ों का केसरिया रंग बिखरा हुआ था। शोभायात्रा के उपरान्त ऋषि लंगर का प्रबन्ध था। सभा महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने आर्य समाज द्वारा किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया। उन्होंने आर्य समाज सरहिन्द को सभा की ओर से 31 हजार रूपये का अनुदान देने की घोषणा की। सरहिन्द आर्य समाज के प्रधान श्री लव कुमार सूद जी ने सभा महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज तथा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर आर्य समाज के संरक्षक व पूर्व प्रधान श्री रमेश कुमार सूद जी को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। 17 फरवरी ऋषिबोधोत्सव पर सात कुण्ड़ीय यज्ञ का आयोजन किया गया। शहर के कई गणमान्य व्यक्ति इसमें यजमान बनें व पुण्य कमाया। अन्त में महर्षि दयानन्द हाई स्कूल के बच्चों ने ऋषि महिमा के भजनों द्वारा समय बांध दिया। इस उत्सव में आर्य समाज मोरिण्डा व मण्ड़ी गोबिन्दगढ़ के अधिकारी और सदस्य विशेष रूप से सम्मिलित हुए। इस पर्व को सफल बनाने में श्री राकेश सूद, श्री योगराज सूद, श्री राजिन्द्र शोरी, श्री अमरजीत सूद, श्री जगनरेश सूद, श्री सुधीर सूद, श्री सुभाष सूद, स्कूल प्रिंसिपल कामिनी धीर व स्टाफ और बच्चों का विशेष योगदान रहा।

आर्य समाज सरहिन्द में ऋषि बोधोत्सव पर पधारे सभा महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज एवं सभा कोषाध्यक्ष को सम्मानित करते हुए आर्य समाज के प्रधान श्री लव कुमार सूद। ऊपर एवं नीचे आर्य समाज के गणमान्य सदस्यों के साथ सभा अधिकारी।

–लव कुमार सूद प्रधान आर्य समाज सरहिन्द

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।